पाठ 3. अभ्यास का महत्व

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ में अभ्यास और लगन का महत्व बताया गया है। इस कहानी द्वारा बच्चे समझ पाएँगे कि यदि किसी चीज़ को पाने की या किसी काम को करने की लगन हो तो बार-बार प्रयत्न करने पर मनुष्य उसे प्राप्त कर ही लेता है इसीलिए कहा जाता है प्रयत्न और मेहनत करने वालों के लिए कुछ भी असंभव नहीं होता।

पाठ का सारांश

मनुष्य अगर बार-बार अभ्यास करे तो कठिन काम भी आसान हो जाता है। वरदराज नाम का बालक आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण करने के लिए आया था। परंतु उसका मन पढ़ाई में न लगता था। उसे पढ़ा हुआ पाठ याद ही नहीं रहता था। जब गुरु जी भी हार मान गए तो उन्होंने वरदराज से अपने घर लौट जाने को कहा। वरदराज दुखी मन से घर लौट चला। रास्ते में पानी पीने वह एक कुएँ पर गया। कुएँ की जगत पर पड़े निशानों को देख अचानक उसके मस्तिष्क में विचार आया कि जब रस्सी की रगड़ से कुएँ की जगत पर निशान पड़ सकते हैं और घड़ों को रखने से ज़मीन पर गड्ढे पड़ सकते हैं तो फिर लगातार परिश्रम करने से मैं विद्वान क्यों नहीं बन सकता। वह वापिस आश्रम में लौट आया। उसने रात-दिन एक कर दिए। उसने बहुत मेहनत की। आगे चलकर वह संस्कृत का बहुत बड़ा विद्वान बना।

अध्यापन संकेत

बच्चों से पाठ के एक-एक अंश का वाचन करवाएँ। पूछें कि इस कहानी से उन्हें क्या सीख मिल रही है। बच्चों को विद्या का महत्व समझाएँ।

- ❖ बच्चों को प्राचीन काल की शिक्षा व्यवस्था जैसे–गुरुकुल आदि के बारे में बताएँ।
- ❖ समझाएँ, निरंतर अभ्यास द्वारा हर कार्य सरल हो जाता है।
- ❖ समझाएँ, मेहनत ही सफलता की पहली सीढ़ी है।
- ❖ पाठ के कठिन शब्दों का अर्थ बताएँ तथा कठिन शब्दों का श्रुतलेख भी करवाएँ।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।